निकाह

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

1] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया ऐ नवजवानो तुममे से जो निकाह की जिम्मेदारिया उठाने की ताकत रखता है उसे निकाह कर लेना चाहिए क्यूकी ये निगाह को नीचा रखता और शर्मगाह की हिफाजत करता है (यानी नजर को इधर-उधर आवारा फिरने से और शहवानी ताकत को बे-लगाम होने से बचाता है) और जो निकाह की जिम्मेदारियो को उठाने की ताकात नहीं रखता उसे चाहिए की शहवत का जोर तोड लिए कभी-कभी रोज़ा रखा करे.

_ बुखारी मुस्लीम की रिवायत का खुलासा | रावी अब्दुल्लाह बिन मसउद रदी.

2] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की औरत से चार चिझो की बुनियाद पर शादी की जाती है, उस्के माल की बुनियाद पर, उस्की खानदानी शराफत की बुनियाद पर, उस्की खूबसूरती की बुनियाद पर और उस्के दीन की बुनियाद पर, तो तुम

दीनदार औरत को हासिल करो तुम्हारा भला हो. इस्का मतलब ये है की औरत में ये चार चिझे देखी जाती है, कोई माल देखता है, कोई खानदानी इज़्ज़त का लिहाज करता है, और कोई उस्के खूबसूरती व जमाल की वजह से शादी करता है, और कोई उस्के दीन को देखता है, लेकिन रसूलुल्लाहﷺ ने मुसलमानो को हिदायत की की असल चिझ जो देखने की है वो उस्की दीनदारी और तकवा है, वैसे अगर और सब खूबिया भी उस्के साथ जमा हो जाए तो ये बहुत अच्छी बात है लेकिन दीन को भुला देना और सिर्फ माल व जमाल की बुनियाद पर शादी करना मुसलमानो का काम नहीं. _ बुखारी मुस्लीम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

3] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया औरतों से उस्की खूबसूरती व जमाल की वजह से शादी ना करो, हो सकता है उस्की खूबसूरती उस्को तबाह करदे और ना उस्के मालदार होने की वजह से शादी करो, हो सकता है उस्का माल उस्को तुगया व सरकशी में मुबतला करदे, बल्कि दीन की

बुनियाद पर शादी करो और काले रंग की औरत जो दीनदार हो अल्लाह की निगाह में गोरी खानदानी औरत से बेहतर है.

_ बुखारी मुस्लीम की रिवायत का खुलासा | अब्दुल्लाह बिन उमर रदी.

4] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया, जब तुम्हारे पास शादी का पैगाम कोई ऐसा शख्स लाए जिस के दीन व अखलाक को तुम पसन्द करते हो तो उस्से शादी करदो अगर तुम ऐसा ना-करोगे तो जमीन में फितना और बडी खराबी पैदा होगी. आपﷺ का फरमान का मतलब ये है की शादी के सिलसिले में देखने की चिझ दीन और अखलाक है. अगर ये ना देखा जाए बल्की माल व जायदाद और खानदानी शराफत ही देखी जाए तो मुसलमानो बडी खराबी पैदा होगी. जो लोग इतने दुन्या परस्त बन जाए की दीन उन्की नजर से गिर जाए और माल व जायदाद ही उन्के यहा देखने की चिझे बन जाए तो ऐसे लोग दीन की खेती को सींचने की फिक्र कहा कर सकते है? इसी हालत को रसूलुल्लाहﷺ ने फितना और फसाद कहा है.

_ तिर्मेज़ी की रिवायत का खुलासा.

5] “खुत्बाए निकह” हजरत अब्दुल्लाह बिन मसउद रदी फरमाते की हमको रसूलुल्लाहﷺ ने नमाज का तशहहुद भी सिखाया और निकाह का तशहहुद भी, इबने मसउद रदी ने नमाज का तशहहुद बताने के बाद कहा, और निकाह का तशहहुद ये है शुक्र और तारीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है हम उसीसे मदद मांगते है हम उसीसे मगफिरत चाहने वाले है और अपने नफ्स (अस्तित्व) की बुराईयो के मुकाबला में अल्लाह की पनाह में अपने आपको देते है जिस्को अल्लाह हिदायत दे (और हिदायत चाहने वाले ही को वो हिदायत है) उस्को कोई गुमराह नहीं करसकता, और जिसे गुमराह करदे (और गुमराह सिर्फ उसीको करता है जो गुमराह होना चाहता है) उस्को कोई हिदायत नहीं देसकता, और में गवाही देता हूं की अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक नहीं, और में गवाही देता हूं की हजरत मुहम्मदﷺ अल्लाह के बन्दे और रसूल है.

फिर तीन आयते पढते जो सुफियान सोरी की तशरीह के

मुताबिक ये है :

आयत 1] ऐ ईमान लाने वालो अल्लाह के गजब से बचनेकी पूरी फिक्र रखना, और मरते दम तक अल्लाह के अहकामात (आदेशों) को मानते रहना.

आयत 2] ऐ लोगों अपने पालने वाले की नाराज़गी से बचते रहना जिसने तुम को एक जानसे पैदा किया और उस्से उस्का जोडा बनाया, और फिर उन दोनों के ज़रिए बहुत से मर्द और औरत दुन्या में फैला दिये तो ऐसे खालिक (पालनहार) की नाराजगी से डरते रहना जिस्का नाम लेकर तुम आपस में एक दूसरे से अपने हक की मांग करते हो, और रिश्तेदारो के हुकूक का लिहाज रखना, याद रखो अल्लाह तुमपर निगरान (संरक्षक) है.

आयत 3] ऐ ईमान लाने वालो अल्लाह से डरते रहना और सही बात अपनी जुबान से कहना, तो अल्लाह तुम्हारे कामो को नेक बनाएगा, और इत्तिफाक से कोई गुनाह हो जाए तो उसे माफ कर देगा और जो लोग अल्लाह और रसूल की

फरमाबरदारी करेंगे वो बडी कामयाबी पाएंगे.

ये खुत्बे की तीन आयातों का तर्जुमा है जो निकाह के वकत पढा जाता है यहा पर इस्को लाने का मकसद ये बताना है की निकाह सिर्फ खुशी का नहीं है बल्की वो एक वादा है जो एक मर्द और एक औरत के बीच तय होता है की हम दोनो जिन्दगी भर के साथी और मददगार बन गए है, और ये वादा करते वकत अल्लाह और मानव जाती दोनों को गवाह बनाया जाता है, और निकाह के खुत्बे की आयतें इस बात की तरफ साफ-साफ इशारा करती है की अगर इस एग्रीमेंटमे मियां या बीवी की तरफ से कोई खराबी पैदा की गई और उसे ठीक से निबाह ना गया तो अल्लाह का गुस्सा उसपर भडकेगा और जहन्नम की सज़ाका हकदार होगा, इन तीनों आयतों में यही ईमान वालों से कहा गया है और अल्लाह के गुस्से से बचने की ताकीद की गई है.

_तिर्मीजी की रिवायत का खुलासा.